अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन मध्यस्थ दर्शन - सह-अस्तित्ववाद पर केन्द्रित गतिविधियां - कार्यक्रम पर आधारित

रपट

मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद के प्रणेता श्रद्धेय ए. नागराज ने पवित्र नर्मदा के उद्गम अमरकंटक में विगत 50 वर्षों की सघन, साधना अध्ययन और चिंतन से सर्वमानव के आचरण की स्थिरता-निश्चयता के सूत्रों की पहचान की और मानवत्व की व्याख्या करके मानव-चेतना विकास का मार्ग प्रशस्त किया। विगत 30 वर्षों के कठोर तप और प्रगाढ़ चिंतन के कारण श्रद्धेय ए. नागराज से चार दर्शन ग्रंथ - अनुभव दर्शन, मानव व्यवहार दर्शन, कर्म दर्शन, अभ्यास दर्शन; तीन वाद - समाधानात्मक भौतिकवाद, व्यवहारात्मक जनवाद, और अनुभवात्मक अध्यात्मवाद; तीन शास्त्र - व्यवहारवादी समाजशास्त्र, आवर्तनशील अर्थचिंतन और मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान तथा परिभाषा संहिता, मानवीय संविधान प्रस्तुत हुआ। इसका प्रकाशन बिना किसी सार्वजनिक धन के सहयोग से हुआ। अस्तित्व की सम्पूर्ण क्रियाओं के द्वारा श्रद्धेय ए. नागराज ने 25 वर्षों से इसके लोकव्यापीकरण के स्वयस्फूर्त प्रयास किये। इस दरम्यान आपसे देश के शीर्षस्थ, शिक्षाशास्त्री, न्यायविद्, वैज्ञानिक, तकनीकी विशेषज्ञ, अनेक कुलपति, राजनेता और सैकड़ों स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रमुख, पत्रकार व लेखक अमरकंटक में भेंट करने और चर्चा करने आते रहे। इनमें से सैकड़ों लोगों ने सभ्यता, संस्कृति, विधि और व्यवस्था के श्रद्धेय ए. नागराज जी के चिंतन को आधार बना कर अपना सम्पूर्ण जीवन इस अभियान को समर्पित किया। बिना किसी संस्थागत रूप लिये बिना भी हजारों लोगों के जीवन में इसने क्रांतिकारी परिवर्तन किये हैं। संक्षेप में इस अभियान के तहत निम्नांकित कार्य सम्पन्न किये गए।

(1) मानव चेतना विकास मूल्य शिक्षा :- पर आधारित (लोकशिक्षा अभियान)

अनेक अनौपचारिक प्रयासों के उपरांत दिल्ली आईआईटी में प्रोफेसर सत्य जी के प्रयासों से 1991-92 आईआईटी के

→ 25

अध्यापकों के साथ श्रद्धेय नागराज जी के शिविर एवं विमर्श कार्यक्रम सम्पन्न हुए। जिसके आधार पर प्रोफेसर सत्य जी ने विद्यार्थियों के बीच में इसे ले जाने में सफलता प्राप्त की। दिल्ली आईआईटी में वर्ष 1996 में इसे पाठ्यक्रम में आंशिक रूप से शामिल किया गया। 2001 में राष्ट्रीय मूल्य शिक्षा केंद्र की स्थापना यहाँ हुई और 2002-05 के मध्य जीवन विद्या को पाठ्यक्रम के रूप में विकसित करने में सफलता प्राप्त हुई। लगभग एक हजार विद्यार्थी इससे लाभान्वित हो चुके हैं और आईआईटी दिल्ली के लगभग दस अध्यापक इस अभियान के सतत सम्पर्क में हैं। इसी क्रम में 2007 मई में आईआईटी दिल्ली, कानपुर और आईआईआईटी हैदराबाद के संयुक्त प्रयास से 'Value Education through Jeevan Vidya' राष्ट्रीय सम्मेलन का सफल आयोजन हुआ जिसमें 200 से ज्यादा अकादमिक संस्थाओं के लगभग एक हजार प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

आईआईआईटी हैदराबाद में वर्ष 2005 से जीवन विद्या को एक अनिवार्य पाठ्यक्रम लागू किया गया। 2004-05 से यहाँ पर जीवन विद्या-मानव चेतना विकास शिविरों का आयोजन हुआ अब तक यहाँ पर 12 शिविर और 600 से अधिक विद्यार्थियों व अध्यापकों की भागीदारी सम्पन्न हो चुकी है।

आईआईटी कानपुर में जीवन विद्या संबंधी विमर्श का आयोजन अनौपचारिक रूप से 1996 से शुरू हुआ। कानपुर में अब तक 30 से अधिक शिविर और एक हजार से अधिक लोगों की भागीदारी इनमें हो चुकी है। कानपुर के प्रोफेसर गणेश बागड़िया ने देश में सर्वाधिक शिविर लिए हैं और लगभग तीन हजार लोग इनके शिविरों का लाभ ले चुके हैं। कानपुर आईआईटी में इस वर्ष से मूल्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में जीवन विद्या का अध्यापन सुनिश्चित किया जा रहा है।

मंजूरी सिद्दू (उत्तरांचल) में जीवन विद्या के शिविरों का सिलसिला 2001 से प्रारम्भ हुआ। सिद्दू द्वारा संचालित 16 विद्यालयों में भी इसका अध्यापन किया जा रहा है। मजूरी (सिद्दू) में 15 से अधिक शिविरों का आयोजन हो चुका है जिसमें देश के अनेक हिस्सों से आए 600 से भी अधिक प्रबुद्धों ने हिस्सा लिया है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

→ 23

एन आई टी रायपुर में 2003 में दिल्ली आई आई टी के प्रो० आर.आर. गौड़ एवं एन आई टी रायपुर के प्राचार्य एवं निदेशक के प्रयासों के कारण अभ्युदय संस्थान की पहल पर मानव चेतना विकास एवं शिक्षा पर आधारित अनिवार्य पाठ्यक्रम की शुरुआत हुई। अब तक लगभग 1040 विद्यार्थियों ने इस पाठ्यक्रम का अध्ययन किया है तथा इनके अभ्युदय संस्थान में लगातार शिविर श्री सोमदेव त्यागी एवं प्रो० सभी वाजपेयी जी ले रहे हैं।

रायपुर में जीवन विद्या के शिविरों का सिलसिला 1992-93 से प्रारम्भ हुआ और अब तक लगभग 70-80 शिविरों का आयोजन रायपुर में सम्पन्न हो चुका है। लगभग चार-पाँच हजार लोगों ने इन शिविरों में भाग लिया है।

विगत पाँच वर्षों में अभ्युदय संस्थान में देश के विभिन्न भागों से सामाजिक-शैक्षिक संस्थान के प्रतिनिधियों ने भाग लिया है। इसी क्रम में मुम्बई सोमैया विद्याविहार के 34 अध्यापकों ने यहाँ शिविर में भाग लिया है। अभ्युदय संस्थान पाँचों आयामों में कार्य कर रहा है। छत्तीसगढ़ राज्य देश का पहला राज्य है जहाँ 16 इंजीनियरिंग कॉलेजों में जीवन विद्या को पाठ्यक्रम के रूप में शामिल किया गया है। अभ्युदय संस्थान में भारत के बाहर इंग्लैण्ड, डेनमार्क, जर्मनी, इटली, इजराइल, कनाडा और यू एस आदि अनेक देशों के विदेशी अध्येताओं ने जीवन विद्या के शिविरों में भाग लिया है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

→ 45

देश में आठ राज्यों (उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, उत्तरांचल, दिल्ली, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ और राजस्थान) में जीवन विद्या के शिविरों का आयोजन हो चुका है लगभग 10 हजार लोग किसी न किसी प्रकार से इन शिविरों में भागीदार बने हैं। मध्यप्रदेश के भोपाल में भी बरकत उल्ला विवि के महिला अध्ययन केंद्र में एम.फिल के पाठ्यक्रम में एक प्रश्नपत्र में इसे शामिल किया (2006) है।

के.जे. सोमैया विद्याविहार मुम्बई में जीवन विद्या को उनके सभी 34 संस्थानों में लागू करने के लिए एक कार्यक्रम का आयोजन, मई 2007 में मुम्बई में आयोजित किया गया जिसमें सोमैया न्यास के अध्यक्ष ने एक स्वतंत्र अध्ययन केंद्र - जीवन विद्या संस्थान की स्थापना की घोषणा की।

(2) ग्राम स्वराज्य अभियान:

मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद के दृष्टिकोण पर आधारित ग्राम स्वराज्य अभियान के लिए मध्यप्रदेश सरकार से वर्ष 2001 में प्रशासन अकादमी भोपाल में बैठक आयोजित कर इसे मॉडल के रूप में प्रस्तुत करने के लिए परिवारमूलक ग्रामस्वराज व्यवस्था को प्रमाणित करने के क्रम में पहल प्रारम्भ हुई। शासन ने केंद्रीय और जिला स्तरीय समिति बना कर डिंडोरी जिले के दो ग्रामों में इसे प्रमाणित करने की स्वीकृति प्रदान की। ~~प्रशासनिक के राजनीतिक अस्थिरता के कारण यह योजना लंबित है।~~

इसी क्रम में कानपुर के आसपास 20-25 ग्रामों में, मजूरी के पास 16 ग्रामों में दुर्ग अछोटी के पास के 10-12 ग्रामों में तथा पलड़ी (पश्चिम उत्तरप्रदेश के 20-25 ग्रामों) में परिवारमूलक ग्राम स्वराज तथा मानव चेतना मूल्य शिक्षा के प्रयास किये जा रहे हैं।

(3) मानवीय संविधान योजना

श्रद्धेय ए. नागराज जी ने मानवीय संविधान का प्रारूप लगभग 12 वर्ष पूर्व तैयार कर लिया था तथा देश प्रसिद्ध न्यायविदों (सर्वोच्च न्यायालय

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

→ 85